पुष्प की अभिलाषा

पं. माखनलाल चतुर्वेदी

चाह नहीं, मैं सुरबाला के गहनों में गूँथा जाऊँ,
चाह नहीं, प्रेमी माला में बिंध प्यारी को ललचाऊँ ।
चाह नहीं, सम्राटों के शव पर 'हे हरि !' डाला जाऊँ,
चाह नहीं, देवों के सिर पर चढ़ूँ भाग्य पर इठला ऊँ ।
मुझे तोड़ लेना वनमाली,
उस पथ पर देना तुम फेंक।
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने,
जिस पथ जावें वीर अनेक ।

(यह देशप्रेम की कविता है । कवि ने पुष्प के माध्यम से मातृभूमि के लिए सर्वस्व समर्पण की भावना को व्यक्त किया है । देश के लिए जीवन का बलिदान देनेवाले वीरों के सम्मान में पुष्प उनके रास्ते पर बिछ जाना चाहते हैं ।)

शब्द-अर्थ

अभिलाषा - इच्छा
चाह - इच्छा
सुरबाला - अप्सरा
इठलाना - इतराना, घमंड करना
वनमाली - वन के माली
पथ - रास्ता
बिंध - छेद, चुभाना
शव- मृत शरीर
मातृभूमि - धरती माँ

अभ्यास

भाव-बोध :

मौखिक :

१. इस कविता का मुख्य भाव क्या है ?
२. पुष्प ने वनमाली से क्या कहा और क्यों ?
३. पुष्प की क्या अभिलाषा है ?
४. आपकी अभिलाषा क्या है ?
६. लड़ाई के अलावा आप किस प्रकार देश-सेवा में अपना योगदान दे सकते हैं ?

लिखित :

१. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव समझाओ :

मुझे तोड़ लेना वनमाली,
उस पथ पर देना तुम फेंक।
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने,
जिस पथ जावें वीर अनेक ।

२. 'प्यारी को ललचाऊँ' से कवि का क्या अभिप्राय है ? लिखो ।
३. सही उत्तर चुनिए और (✓) चिह्न लगाओ :

पुष्प वीरों के मार्ग पर फेंका जाना चाहता है, क्योंकि
–उसे पथ पर बिछना अच्छा लगता है ।

– वह वीर लोगों के प्रति आकर्षित है।

– वीरों के सम्मान में शहीद होने को ही वह अपने जीवन की सार्थकता समझता है ।

– वीरों को वीर-गति दिलाने में अपने को धन्य समझता है ।

भाषा-बोध :

१. नीचे लिखे शब्दों से एक-एक वाक्य बनाओ :

पुष्प, भाग्य, सुर बाला, हरि

२. नीचे लिखे शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखो :

चाह, पुष्प, देव, पथ, भूमि

अनुभव विस्तार :

१. कवि की पठित कविता देशप्रेम से संबंधित है ।

देशप्रेम से ओत-प्रोत इनकी कुछ अन्य रचनाएँ पढो ।

२. देश प्रेम से संबंधित ऐसी एक कविता लिखने की कोशिश करो :

३. इस कविता को कंठस्थ करो और उसे दूसरों को सुनाओ ।